हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 9 | अंक 23 | मई 2017 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

हिंदी भाषा का मानकीकरण !

"भाषा का मानकीकरण"से हम यह समझते हैं कि भाषा की गुणवत्ता व शुद्धता आदि के संबंध में संदेह की गुंजाइश न रह जाए । आज हम हिंदी भाषा के मानक रूप की बात करते रहते हैं, लेकिन क्या मानक है और क्या अमानक, हमें इसकी सही जानकारी है ?

इस विषय पर प्रकाश डालने के लिए हिंदी प्रचारिणी सभा ने पिछले 15-16 अप्रैल को भारतीय उच्चायोग के सहयोग से हिंदी भवन-लोंग माउंटेन में आयोजित द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । इसके अंतर्गत इसी विषय पर गम्भीरता के साथ विचार-विमर्श हुआ । इसी उपलक्ष्य पर भारत के मध्य प्रदेश, जबलपुर शहर से हिंदी-व्याकरण के विशेषज्ञ प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल को आमंत्रित किया गया था ।

ऐसा समझा जाता है कि हिंदी एक बहुत ही सरल भाषा है । पर भाषा की गहराई में उतरने पर ही पता चलता है कि शुद्ध भाषा का प्रयोग करना कितना कठिन होता है । वैसे तो लोग हिंदी बोलना रेडियो अथवा टीवी से सुन-सुनकर कामचलाऊ-भाषा तो सीख लेते हैं । पर क्या इतना जानना ही काफ़ी है ? हिंदी एक बहुत ही समृद्ध भाषा है जिसमें अन्य कई भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं । ऐसा कहते हैं कि उन शब्दों का अब हिंदीकरण हो गया है और हम उन शब्दों का खुलकर प्रयोग कर सकते हैं । परन्तु अभी भी उन शब्दों को प्रयोग करनेवालों में मतभेद हैं ।

हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से सभी बैठकाओं के शिक्षकों व छात्रों को भी आमंत्रित किया गया । पर कुछ लोगों का दुर्भाग्य ही कहेंगे जो इसमें सम्मिलित नहीं हो पाए । यह मौका बार-बार नहीं आएगा, ऐसा सोचकर मॉरीशस के कोने-कोने से छात्रों व अध्यपाकों ने अपनी उपस्थिति दी तथा इस संगोष्ठी से लाभांवित हुए । कइयों ने अपनी शंकाएँ दूर करने के लिए व्याकरण-संबंधी तथा भाषा के मानकीकरण विषय पर प्रश्न किए और प्रो. शुक्ल जी ने उनके प्रश्नों का उत्तर किया ।

"हिंदी भाषा का मानकीकरण"विषय पर शायद ही मॉरीशस में किसी अन्य संस्था ने अब तक ऐसी संगोष्ठी का आयोजन किया है । भविष्य में भी सभा ऐसी संगोष्ठी का आयोजन करने का विचार रखती है ।♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

– संक्षिप्त परिचय –

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल भारत के मध्य प्रदेश के जबलपुर से हैं । आप वर्तमान में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय-जबलपुर के हिंदी तथा भाषा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही कई हिंदी संस्थाओं के मानद अधिकारी हैं ।

अध्यापन (एम.ए, एम.फिल, पी-एच.डी) में आपका 36 वर्षों का अनुभव है । आपके प्रशासनिक अनुभव – 1. हिंदी विभागाध्यक्ष । 2. पूर्व अधिष्ठाता । 3. पूर्व निदेशक, केंद्रीय पुस्तकालय । 4. निदेशक, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी । 5. प्रभारी निदेशक, कालिदास अकादमी । 6. प्रभारी निदेशक, सिंधी अकादमी । 7. प्रभारी निदेशक, मध्यप्रदेश उस्ताद अलाउद्दीन अकादमी । 8. पूर्व सदस्य, हिंदी परामर्श मंडल, केंद्रीय साहित्य अकादमी । 9.पूर्व कार्यकारिणी सदस्य, राजा मानसिंह संगीत एवं कला विश्व विद्यालय । तथा कई संस्थाओं के नामित एवं कार्यकारिणी सदस्य ।

आपके प्रकाशित ग्रंथ –37; प्रसार-व्याख्यान –102; पी-एच-डी –34; एम- फिल-शोध निर्देशन – 70 तक हैं ।

विदेश यात्रा – साहित्यिक यात्रा – दक्षिण अफ्रीका तथा श्रीलंका

सम्मान – 'विश्व तुलसी सम्मान' फ्लोरिडा, अमेरिका
– डी. लिट् मानद उपाधि, विक्रमशिला विद्यापीठ,बिहार
– यास्कर पुरस्कार, अखिल भारतीय विद्वत परिषद, वाराणसी
– रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य सम्मान,सांस्कृतिक प्रकोष्ठ, भोपाल
–साहित्याचार्य की मानद उपाधि, दक्षिण भारत प्रचार सभा, हैदराबाद

सम्प्रति – 1. आचार्य एवं अध्यक्ष, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
2. राष्ट्रीय अध्यक्ष,अखिल भारतीय साहित्य परिषद, दिल्ली
3. निदेशक, (मानद) अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र, उत्तर प्रदेश ।

..... पिछले अंक का शेष भाग

हिंदी की सम्भावनाएँ ।

" साभार – राष्ट्रभाषा सन्देश "

जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में हिंदी के स्वतंत्र विभाग हैं । इंग्लेण्ड में अंग्रेज़ी के पश्चात सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हिंदी है । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त न्यूज़ चैनल बी. बी. सी. पर महाभारत इतना लोकप्रिय हुआ, जिसे कई बार प्रसारित किया गया था । यूगोस्लाविया के अनेक विश्वविद्यालयों में विगत वर्षों से हिंदी पढ़ाई जाती है । इटली में भारतीय दर्शन और साहित्य के प्रति विशेष आकर्षण है । यहाँ के विश्वविद्यालय में भी अनेक छात्र हिंदी के माध्यम से अध्ययन–अध्यापन कर रहे हैं । सोवियत संघ के अलावा मंगोलिया, रोमानिया, आस्ट्रिया, पौलेण्ड आदि पूर्वी यूरोपीय देशों के छात्र हिंदी सीखने मोस्को विश्वविद्यालय आते हैं । इतना ही नहीं, हिंदी भाषा का अनुवाद जितना रूसी भाषा में हुआ है, उतना संसार की किसी भी भाषा में नहीं हुआ है । सीमावर्ती देश चीन के लोग आज भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि चीनी भाषा के निर्माण में भारत के पाणिनी व्याकरण का विशेष योगदान रहे हैं । यहाँ के पेइकिंग रेडियो पर आज भी हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं । रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अनेक प्रसिद्ध किताबों के साथ 'चित्रलेखा','मैला आँचल – जैसी चर्चित कृतियों का भी अनुवाद चीनी भाषा में हुआ है । इतना ही नहीं, चीन की ऐतिहासिक दीवार की स्वागत शिला पर 'ओम नमो भगवते' हिंदी में लिखा हुआ है ।

विश्व में अत्यधिक शक्तिशाली राष्ट्र माना जानेवाला अमेरिका ने भी कई दशकों पूर्व ही हिंदी के महत्त्व को स्वीकार करते हुए 1965 में ही अपनी सुविधा के अनुसार हिंदी–व्याकरण तैयार कर लिया था । कालान्तर में अनेक विश्वविद्‌लय; जैसे कैलिफ़ोनिया, शिकागो, टेक्सास, कोलम्बिया आदि में उसने हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था करवायी, जो आज भी जारी है ।

व्यवहारिक, व्याकरणिक और लिपि की दृष्टि से हिंदी काफ़ी वैज्ञानिक, सरल, स्पष्ट तथा व्यवहारिक है । हिंदी की देवनागरी काफ़ी समृद्‌ध और क्षमतावान है । इसकी विशेषता यह है कि इससे बोलते समय जितनी ध्वनियाँ निकलती हैं, उतने ही शब्द भी हैं । परन्तु, अंग्रेज़ी, फ्रेंच या अन्य भाषाओं में यह विशेषता नहीं है । ध्वनियों की दृष्टि से हम देखें , तो अंग्रेज़ी में 'u ' ऐसे स्वर तथा व्यंजन है, जिनका प्रयोग अलग–अलग रूप में होता है । जैसे – cut, but और put प्रथम द्‌वितीय शब्द में u का उच्चारण 'अ' के रूप में हुआ है । यहीं तृतीय शब्द में उसका उच्चारण 'उ' के रूप में । इसी तरह sad, bad, mad इनमें ध्वनि भिन्न रूप में उच्चारित हुई है । इस तरह अन्य कई उदाहरण दिए जा सकते हैं ।

हमें हिंदी–फिल्में, धारावाही–नेता, अभिनेता, गीत सभी पसन्द हैं, लेकिन हिंदी पसन्द नहीं हैं । यह एक अजीबोगरीब स्थिति है । इसके बावजूद हिंदी का प्रचार–प्रसार तथा उसे समृद्‌ध करने का काम जितना अहिंदी भाषी प्रान्तों से आज भी हो रहा है, यदि हिंदी भाषी प्रान्तों से भी हो, तो ज्यादा सफलता मिल सकती है ।

हिंदी में विज्ञान, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी और प्रौद्‌योगिकी की शिक्षा प्रदान करना असम्भव बतलाया जा रहा है । भारत में इन विषयों का हिंदी में शब्दकोश तक तैयार नहीं किया गया । जब कि चीन, जापान, जर्मनी आदि देशों में अंग्रेज़ी नहीं के बराबर है और वहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी खोजें उनकी भाषा में मिलती हें । राष्ट्रभाषा हिंदी समृद्‌ध होने के बावजूद खोज और अनुसंधान इस भाषा में क्यों नहीं सम्भव हो रहा ? यह चिन्ता की बात है ।

आज विश्व में सबसे अधिक हिंदी बोलनेवाले 1103 मिलियन है और 1052 मिलियन चीनी भाषा बोलनेवाले लोग हैं । इस तरह तृतीय स्थान पर अंग्रेज़ी बोलनेवाले लोग हैं, जो अंतरराष्ट्रीय भाषा है । जबकि हिंदी आज विश्व के कोने–कोने में पहुँच चुकी है । दुनिया के देशों में लगभग 160 विश्वविद्‌यालयों में अध्ययन–अध्यापन का कार्य सम्पन्न हो रहा है । वह दिन अब दूर नहीं है, जब हिंदी विश्वभाषा बनकर लहराएगी ।

भारत ही नहीं, विश्व के पटल पर हिंदी –साहित्य–लेखन की असीम सम्भावनाएँ बनती जा रही हैं । वैसे विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार बहुत देर से हुआ है, फिर भी प्रवासी भारतीयों को जब भावनाएँ झकझोरती हैं, तो वे हिंदी में रचना करने लगते हैं । जो हिंदी की उन्नति का सकारत्मक पहलु है । अंग्रेज़ भारत से मज़दूरों को मॉरीशस, फीजी, गुयाना, टोबैगो, त्रिनिडाड, अफ़्रीका, सूरीनाम तथा टंग्लैण्ड ठीका पर ले गए थे, जिन्हें अपने देश फिर कभी नहीं लौटाए गए । उनकी पीढ़ियाँ अंग्रेज़ों द्‌वारा दी गई अपने पूर्वज़ों की यातनाओं को याद करके साहित्य सृजन कर रहे हैं । वर्तमान समय में हिंदी को उच्च स्तर पर पहुँचानेवाले भारतवंशी, जो प्रवासी भारतीय के रूप में पहचाने जाते हैं और जो हिंदी को पैतृक सम्पत्ति के रूप में स्थापित करके विस्तार से प्रचार कर रहे हैं । इन लोगों द्‌वारा हिंदी में पत्र–पत्रिकाएँ भी छपती रही हैं ।

राष्ट्रभाषा हिंदी की अपनी शक्ति और सामर्थ्य है , जिसमें कई धर्म–संस्कृतियों की सम्पदा तथा विविध देशी–विदेशी विद्‌वानों की सेवा–साधना समृद्‌ध होती चली जा रही है । हिंदी पढ़ने–लिखने और समझनेवाले विश्व के कोने–कोने में मौजूद हैं ।

डॉ. प्रदीपकुमार सिंह
अध्यक्ष – साठ्ये महाविद्‌यालय
मुम्बई – भारत

क्रमशः ..... अगले अंक में ।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 15–16 अप्रैल 2017

हिंदी प्रचारिणी सभा तथा भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्त्वावधान में एक द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15–16 अप्रैल को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन में हुआ था। संगोष्ठी का मूल उद्देश्य वर्तमान युग में मानक हिंदी के स्वरूप तथा उसकी उपयोगिता पर आधारित रहा। उस अवसर पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल जी को आमंत्रित किया गया था जो जबलपुर–मध्यप्रदेश, भारत से हैं।

शनिवार 15 अप्रैल को उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए कई प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित रहे, जिनमें मंत्री धरमेन्दर शिवशंकर वित्तीय सेवा, उचित शासन तथा संस्थागत सुधार मंत्री; भारतीय उच्चायुक्त श्री अभय ठाकुर, शिक्षा मंत्रालय की प्रतिनिधि श्रीमती घूरा; विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र; हिंदी अध्यापक संघ के प्रधान श्री सत्यदेव टेंगर, कई गणमान्य अतिथि तथा हिंदी के कई कर्मठ सेवक भी उपस्थित थे।

शनिवार 15 अप्रैल का कार्यक्रम दो सत्रों में हुआ। पहले सत्र के दौरान प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल जी ने "भाषा चिंतन की परम्परा" विषय पर बात की। उनके पश्चात डॉ. श्रीमती नूतन पांडे ने "हिंदी भाषा का मानकीकृत रूप" पर खुलासा दिया तथा डॉ. श्रीमती लक्ष्मी झमन ने "मानक भाषा की विशेषताएँ" विषय पर अपना आलेख पढ़ा। सत्र की समाप्ति पर प्रो. शुक्ल जी ने अपना विचार व सुझाव दिया।

दूसरे सत्र में डॉ. जयचन्द लालबिहारी ने "उच्चारण त्रुटियाँ और आर्थी विचलन" विषय पर प्रोजेक्टर द्वारा अपनी प्रस्तुति की। सुश्री अंजलि चिंतामणि ने "त्रुटि विश्लेषण और निदानात्मक शिक्षा" विषय पर अपना आलेख पढ़ा। उनके बोलने के पश्चात प्रो. शुक्ल जी ने अपना विचार व सुझाव दिया। इस तरह प्रथम दिवस की संगोष्ठी का दूसरा सत्र भी सकुशल पूरा हुआ।

संगोष्ठी का दूसरा दिन रविवार 16 अप्रैल का सत्र "साहित्य और मिडिया में हिंदी का मानकीकरण" विषय पर प्रोजेक्टर द्वारा श्री राज हीरामन का प्रस्तुतिकरण रहा जो कि बहुत ही दिलचस्प विषय रहा। उनकी प्रस्तुति के बाद एक बार फिर प्रो. शुक्ल जी ने अपना विचार व सुझाव दिया। उस दिन देश के कई विद्यालयों के छात्रों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

दोनों ही दिनों के सत्रों के दौरान सभागार में उपस्थित लोगों के प्रश्नों, प्रतिक्रियाओं, विचारों एवं सुझावों का स्वागत किया गया। सत्र के अन्त में प्रो. शुक्ल जी ने लोगों को संबोधित किया तथा भाषा व व्याकरण से संबंधित कई जानकारियाँ दीं।

समापन समारोह में बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ. विनोद कुमार मिश्र ने यह स्पष्ट किया कि हिंदी देश–विदेश की भाषाओं के प्रचलित शब्दों को समाने की क्षमता भले ही रखे; हमें सर्वत्र मानक हिंदी का ही प्रयोग करना चाहिए।

इस संगोष्ठी के आयोजन से शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों तथा भिन्न–भिन्न संस्थाओं से आए प्रतिनिधि लाभांवित हुए। ♦

विवरण– श्री मोहन श्रीकिसुन
उप–प्रधान : हिंदी प्रचारिणी सभा

उद्घाटन समारोह – अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 15–16 अप्रैल 2017

कुमारी खुशी जोरी द्वारा गणेश–वंदना पर आधारित नृत्य की प्रस्तुति

शिक्षा मंत्रालय की प्रतिनिधि श्रीमती घुरा, अतिथि वक्ता प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, महामहिम श्री अभय ठाकुर, मंत्री श्री धरमेंदर शिवशंकर तथा प्रधान श्री यंतदेव बुध

सभा के अध्यक्ष मंत्री जी को गुच्छा प्रदान करते हुए

सभा के मंत्री महामहिम जी को गुच्छा प्रदान करते हुए

श्रीमती घुरा को गुच्छा प्रदान कर रही सभा की सदस्या श्रीमती रामरूप

सभा के उप–प्रधान मोहन श्रीकिसुन प्रो. शुक्ल जी को गुच्छा प्रदान करते हुए

उद्घाटन समारोह के दौरान सभागार में लोगों को संबोधित करते हुए अतिथिगण

कैनडा से आए अतिथि

श्री श्याम त्रिपाठी हिंदी भवन के सामने स्थित गिरधारी भगत जी की प्रतिमा के समक्ष डॉ. विनोद तथा डॉ. भोला के मध्य में खडे, साथ में सभा के सदस्यगण ।

आपको यह जानकर हैरानी के साथ खुशी भी होगी कि यहाँ से दूरदराज़ देश कैनडा में भी एक संस्था है जिसका नाम हिंदी प्रचारिणी सभा है ।उस संस्था के वर्तमान प्रधान श्री श्याम त्रिपाठी हैं ।संस्था द्वारा "हिंदी चेतना" नाम की पत्रिका निकलती है जिसके संपादक भी श्री श्याम त्रिपाठी ही हैं । कैनडा की हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री श्याम त्रिपाठी 25 मार्च को हिंदी भवन पधारे । वे सभा के कार्यकारिणी सदस्यों से मिले । उन्होंने यहाँ आने की खुशी ज़ाहिर की तथा फिर आने का ज़िक्र किया । उस अवसर पर डॉ. नूतन पांडे–द्वितीय सचिव,भारतीय उच्चायोग, डॉ. विनोद कुमार मिश्र–महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय तथा अन्य कई मॉरीशसीय साहित्यकार उपस्थित रहे । हमारी सभा के बारे में जानकारी पाकर वे अति प्रसन्न हुए तथा यहाँ हिंदी भाषा के उत्थान के लिए किए जानेवाले कार्यों की सराहना की । ♦

हिंदी दिवस तथा कवि सम्मेलन

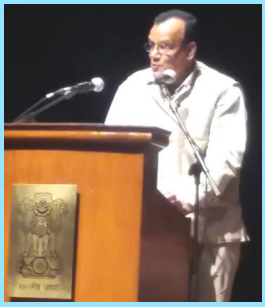

कविता सुनाते हुए शम्भु जी ।

महामहिम शम्भु जी को सम्मानित करते हुए ।

विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सौजन्य से आयोजित हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर कवि सम्मेलन का आयोजन गत 13 फरवरी को हुआ था । कविता पाठ करनेवालों में भारतीय तथा मॉरीशसीय कवि भी शामिल थे । यह कार्यक्रम इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स में शाम के 18.30 बजे आयोजित हुआ था । कवि–सम्मेलन का संचालन भारतीय उच्चा–योग की द्वितीय सचिव डॉ.श्रीमती नूतन पांडे तथा भारत से आए डॉ. विवेक गौतम कर रहे थे । कुल दस कवियों ने भाग लिया जिनमें हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज शम्भु भी रहे । एक से बढ़कर एक कविता सुनाई गई जिनके रस्सास्वादन करने के लिए पूरे मॉरीशस के कोने–कोने से आए हुए थे । हम सभा की ओर से सभी कवियों को बधाई देते हैं तथा विशेष बधाई हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज शम्भु को जिन्होंने अपनी कविता से सबका मन जीत लिया ।♦

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय–मानव संसाधन विकास मंत्रालय – भारत सरकार)

हिंदी वर्तनी की विविधता को दूर कर वर्तनी की एकरूपता स्थापित करने का प्रयास किया गया है । केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तिका –देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण संस्करण 2016 एक बहुत ही आवश्यक दस्तावेज़ है । इसमें देवनागरी लिपि से संबंधित कुछ ऐसी जानकारियाँ हैं जिनका ज्ञान होना हर हिंदी शिक्षक के लिए आवश्यक है । निम्नलिखित कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैं ।

हिंदी के कोशों में वे उन सारी भाषाओं के शब्द प्रविष्टियों के रूप में शामिल किए जाएँगे जो हिंदी के अपने हो चुके हैं :

अंग्रेज़ी – बटन, पिन, पेट्रोल, पुलिस, पेंसिल, बूट, कैमरा, फ़ोटो, रेडियो, सिनेमा, साइकल, कैलेंडर, फ्रेम, पैन्ट, लेंस, नाइट्रोजन, डॉक्टर, कॉलेज, ऑफिस, कॉल, कांन्फ्रेंस, टॉफ़ी, पॉलिश, फॉर्म, फ़ुटबॉल, मनीऑर्डर, हॉल, ऑक्सीजन आदि ।

अरबी – (प्रायः फारसी के माध्यम से) कब्र, खराब, कागज़, कानून, अल्लाह आदि ।

फारसी – कमर, कम, खाक, गुम, वापस, खुदा आदि ।

तुर्की – चाकू, तोप, लाश आदि ।

पुर्तगाली – (अधिकतर गुजराती, मराठी के माध्यम से) अलमारी, कमीज़, कमरा, मेज़, तौलिया, नीलाम, पादरी, काजू आदि ।

फ्रांसीसी – कारतूस, अंग्रेज़, ऐडवोकेट, मेयर, लैंप, वारंट, सूप, कूपन आदि ।

स्पेनी – सिगार, सिगरेट, पिउन आदि ।

जर्मन – ट्रेन, सेमिनार आदि ।

इतालियन – लॉटरी, कारटून, रॉकेट, मलेरिया, स्टूडियो, पिआनो, वायलिन आदि ।

हिंदी में प्रयुक्त भारतीय भाषाओं के शब्द :

मराठी शब्द : बाजू, लागू, चालू आदि ।

बांगला शब्द : रसगुल्ला, चमचम, उपन्यास, आपत्ति आदि ।

पंजाबी शब्द : सिक्ख, खालसा, भांगड़ा आदि ।

ओड़िआ शब्द : अटका आदि ।

द्रविड़ परिवार की भाषाओ के शब्द : डोसा, इडली, मीन, सांभर आदि ।

गुजराती शब्द : हड़ताल, गरबा आदि ।

अन्य सारे विदेशी शब्दों को हिंदी में प्रयुक्त करना हो तो उन्हें शब्द व अवतरण चिह्न ' ' में लिखना होगा । जैसे : यह एक 'प्रॉब्लम' है ।

"साभार–देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण संस्करण 2016"

ता. 3 जून 2017 को परीक्षाओं का आवेदन

परीक्षा	शुल्क	प्रमाण
प्रवेशिका	375 रुपये	छठी कक्षा व सी. पी. ई
परिचय	425 रुपये	प्रवेशिका या फोर्म 2 में हिंदी
प्रथमा	475 रुपये	परिचय या फोर्म 3 में हिंदी
मध्यमा	575 रुपये	प्रथमा या एस. सी में हिंदी
उत्तमा (1)	625 रुपये	मध्यमा या एच.एस.सी. में हिंदी
उत्तमा (2)	675 रुपये	उत्तमा प्रथम खण्ड
उत्तमा (3)	800 रुपये	उत्तमा द्वितीय खण्ड